# अध्याय-चतुर्थ

# प्रदत्त विश्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या

# अध्याय – चतुर्थ

## प्रदत्त विश्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या

### 4.1 भूमिका–

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध प्रक्रिया के आगमन तथा निगमन तर्क के प्रयोगो को व्यक्त करता है। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं की स्वीकृति हेतु प्रदत्तों को समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है, जो नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यिकरण के रूप से होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अन्तर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना अनेक परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पत्तियों द्वारा किया जाता हैं।

### 4.2 परिकल्पनाओं का परीक्षण–

प्रस्तुत अध्ययन में उचित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया हैं। इस शोध अध्ययन में परिकल्पनाओं की जाँच करने के उपरांत त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणामों की व्याख्या की गई है, जो अंग्राकित सारणियों में प्रस्तुत हैं।

#### 4.2.1 परिकल्पना कमांक–1 ($Ho^1$)–

प्रस्तुत शोधकार्य की प्रथम परिकल्पना ($Ho^1$) यह है कि **'प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एंव उनके अध्ययन–अध्यापन के मध्य सार्थक संबंध नहीं होगा।'** इसका आशय यह हुआ कि प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनके अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव का कोई असर नहीं

होता है। इसका परीक्षण करने हेतु तालिका क्रमांक- 4.2.1 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया हैं।

**तालिका क्रमांक्-4.2.1**

**प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव के मध्य सहसंबंध-गुणांक**

| क्र. N | चर Variable | समूह संख्या N | मुकतांश df | व्यावसायिक संतुष्टि J.S. | अध्ययन-अध्यापन प्रभाव Te.-le.effect | सहसंबंध गुणांक r | परिणाम Resul |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | व्यावसायिक संतुष्टि J.S. | 120 | 118 | 1.000 | -0.157<br>0.086 | -0.157 | NS |
| 2. | अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव Te.-le.effect | 120 | 118 | -0.157<br>0.086 | 1.000 | | |

Not Significant at 0.05 Level :-

तालिका क्रमांक 4.2.1 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं उनके अध्ययन-अध्यापन प्रभाव के मध्य सह संबंध गुणांक का मान -0.157 हैं जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसीलिए वह परिकल्पना ($Ho^1$) स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं है।

**4.2.2 परिकल्पना क्रमांक-2 ($Ho^2$)-**

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की द्वितीय परिकल्पना ($Ho^2$) यह है कि लिंग के आधार पर प्राथमिक शाला के शिक्षकों की

व्यावसायिक संतुष्टि एवं अध्ययन-अध्यापन के प्रभाव के मध्य सार्थक अन्तर नहीं होगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्राथमिक शाला के शिक्षकों की लिंग के आधार पर उनकी व्यावसायिक संतुष्टि एवं अध्ययन-अध्यापन प्रभाव के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। मतलब की महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षक दोनों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव के मध्य सार्थक अन्तर नहीं होता है।

इसका परीक्षण करने हेतु तालिका कमांक-4.2.2 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया हैं।

## तालिका कमांक-4.2.2

### प्राथमिक शाला के शिक्षकों की लिंग के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव के 'टी' मान की सार्थकता

| क्र. N | चर Variable | लिंग Gender | समूह संख्या N | मध्यमान Mean | मानक विचलन S.D. | मुकतांश df | टी.मान t | परिणाम Result |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | व्यावसायिक संतुष्टि | पुरूष | 60 | 25.08 | 1.63 | 118 | 0.063 | NS |
| | | महिला | 60 | 25.07 | 1.23 | | | |
| 2. | अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव | पुरूष | 60 | 19.90 | 1.71 | 118 | 0.731 | NS |
| | | महिला | 60 | 19.67 | 1.78 | | | |

Not Significant at 0.05 Level :-

तालिका कमांक 4.2.2 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक शाला के शिक्षकों में महिला एवं पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का 'टी' परीक्षण एवं उनका ही

अध्ययन–अध्यापन प्रभाव का भी 'टी' परीक्षण जो क्रमशः 0.063 और 0.731 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसीलिए यह शून्य परिकल्पना ($Ho^2$) स्वीकृत की जाती है। इसका अर्थ यह है कि लिंग का शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन प्रभाव पर कोई सार्थक असर नहीं होता है।

### 4.2.3 परिकल्पना कमांक–3 ($Ho^3$)–

प्रस्तुत अनुसंधान की तृतीय परिकल्पना ($Ho^3$) यह है कि **प्राथमिक शाला के शिक्षकों की क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव के मध्य सार्थक अन्तर नहीं होगा।** इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्राथमिक शाला के शिक्षकों का क्षेत्र यानि स्कूल शहरी क्षेत्र में स्थित हो या ग्रामीण क्षेत्र में उनकी व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव पर कोई प्रभाव नहीं होता है। इसका परीक्षण करने हेतु तालिका कमांक 4.2.3से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

## तालिका क्रमांक–4.2.3

**प्राथमिक शाला के शिक्षकों की क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव के 'टी' मान की सार्थकता**

| क्र. N | चर Variable | क्षेत्र Locale | समूह संख्या N | मध्यमान Mean | मानक विचलन S.D. | मुकतांश df | टी.मान t. | परिणाम Result |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | व्यावसायिक संतुष्टि | ग्रामीण Rural | 60 | 25.17 | 1.54 | 118 | 0.696 | NS |
| | | शहरी Urban | 60 | 24.98 | 1.33 | | | |
| 2. | अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव | ग्रामीण Rural | 60 | 20.00 | 2.25 | 118 | 1.365 | NS |
| | | शहरी Urban | 60 | 19.57 | 098 | | | |

Not Significant at 0.05 Level -

तालिका क्रमांक 4.2.3 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक शाला के शिक्षकों पर उनकी व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव पर कोई अन्तर या प्रभाव नहीं होता हैं। प्राथमिक शाला चाहे किसी भी क्षेत्र यानि शहरी या ग्रामीण क्षेत्र हो, शिक्षक की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव के मध्य कोई अन्तर नहीं होता है। इस सारणी में व्यावसायिक संतुष्टि का 'टी' मान 0.696 और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव का 'टी' मान 1.365 हैं जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह शून्य परिकल्पना ($Ho^3$) स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक शाला के

शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव पर क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

### 4.2.4 परिकल्पना क्रमांक-4 ($Ho^4$)-

प्रस्तुत अनुसंधान की चतुर्थ परिकल्पना ($Ho^4$) यह है कि **प्राथमिक शाला के शिक्षकों की योग्यता के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव के मध्य सार्थक अन्तर नहीं होगा।** इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव पर योग्यता का कोई प्रभाव नहीं होता है। तालिका क्रमांक-4.2.4 से प्राप्त परिणामों के आधार पर इसके परीक्षण का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया हैं।

**तालिका क्रमांक-4.2.4**

**प्राथमिक शाला के शिक्षकों की योग्यता के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव के मध्य 'एफ' अनुपात की सार्थकता**

| क्र. N | चर Variable | प्रसरण .स्त्रोत Suree of varieation | वर्ग योग Sum of Squares | मुक्तांश df | औसत का वर्ग योग Mean Square | 'एफ' अनुपात F | परिणाम Result |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | व्यावसायिक संतुष्टि | समूहों के मध्य Beetween Groups | 0.895 | 2 | 0447 | 0213 | NS |
| | | समूहों के अन्तर्गत Wihtin Groups | 245.430 | 117 | 2.098 | | |
| | | | 246.325 | 119 | | | |
| 2. | अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव | समूहों के मध्य Beetween Groups | 0.595 | 2 | 0.298 | 0.096 | NS |
| | | समूहों के अन्तर्गत Wihtin Groups | 361.771 | 117 | 3.092 | | |
| | | | 362.367 | 119 | | | |

Not Significant at 0.05 Level -

तालिका क्रमांक 4.2.4 में प्रस्तुत आँकड़ों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक शाला के शिक्षकों की योग्यता का उनकी व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव पर कोई प्रभाव नहीं होता तालिका 4.2.4 के आँकड़ों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि पी.टी.सी., बुनियादी शिक्षा प्रवीण एवं स्नातक योग्यता वाले शिक्षकों का 'एफ' अनुपात जो व्यावसायिक संतुष्टि का 0.213 है और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव का 0.096 है जो 'एफ' सारणी का मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसीलिए यह शून्य परिकल्पना ($Ho^4$) स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि योग्यता का शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव पर कोई असर नहीं होता हैं।

### 4.2.5 परिकल्पना क्रमांक-5 ($Ho^5$)-

प्रस्तुत अनुसंधान की पांचवीं परिकल्पना ($Ho^5$) यह है कि **प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि स्तर का विश्लेषण करना।**

**तालिका क्रमांक 4.2.5**

| क्र. N | मान्य श्रेणी Valid Categories | शिक्षकों की संख्या संचित आवृत्ति Frequency | प्रतिशत Percent | मान्य प्रतिशत Valid Percent | संचित प्रतिशत Cumulative Perecent |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | बहुत अच्छा Very Good | 114 | 95.00 | 95.00 | 100.00 |
| 2. | अच्छा Good | 6 | 5.00 | 5.00 | |
| | कुल | 120 | 100.00 | 100.00 | |

तालिका 4.2.5 में प्रस्तुत आंकड़ों का अवलोकन कने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक शाला के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि स्तर बहुत अच्छा एवं अच्छा ऐसे दो स्तरों में विभाजित हैं। कुल संख्या के 95 प्रतिशतांक शिक्षक बहुत अच्छा संतुष्टि स्तर रखते हैं जबकि 5 प्रतिशत शिक्षकों का संतुष्टि स्तर अच्छा हैं। यानि कह सकते है कि कुल 100 प्रतिशत शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट हैं। यानि अनुसंधान का उद्देश्य व्यावासायिक संतुष्टि स्तर का विश्लेषण करना यहाँ फलीभूत होता हैं।

## 4.3 परिणामों की विवेचना–

प्रथम परिकल्पना के परीक्षण के बाद प्राप्त परिणामों (तालिका क्रमांक– 4.2.1) के आधार पर यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक संतुष्टि स्तर का अध्ययन–अध्यापन के मध्य कोई संबंध नहीं होता हैं। प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि जब अच्छी होती है तो वे अध्ययन–अध्यापन प्रभावी रूप से कर सकते हैं, क्योंकि यहाँ इस अध्ययन में सभी शिक्षक संतुष्ट पाये गये हैं। जब व्यावसायिक संतुष्टि बढ़ती है तो हो सकता है कि उनके अध्ययन–अध्यापन भी असरकारक होता है। इस अध्ययन में शिक्षकों की अपने व्यवसाय के प्रति एक निष्ठता की भावना देखने को मिलती है। जिससे अध्यापन एवं अध्ययन प्रक्रिया भी प्रभावित होती है। इस अध्ययन में व्यावसायिक संतुष्टि का कोई भी प्रभाव उनके अध्ययन–अध्यापन पर असर नहीं करता है। इससे वह पता चलता है कि वह अपने व्यवसाय से संतुष्ट है, लेकिन उनका उनके अध्ययन–अध्यापन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

द्वितीय परिकल्पना के परीक्षण के बाद प्रस्तुत परिणामों (तालिका क्र. 4.2.2) के विश्लेषण से पाया गया कि व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन – अध्यापन पर प्रभाव पर लिंग यानि पुरुष और महिला शिक्षकों में कोई अंतर नहीं है। इससे वह ज्ञात हुआ है कि महिलाएँ भी पुरूष की तरह अपने कार्य में कृतज्ञ एवं कार्यनिष्ठा से आगे बढ़ती है। वह अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहते हुए अपना अध्ययन एवं प्रभावी अध्यापन में योग्य तालमेल बनाये रखती है।

तृतीय परिकल्पना के परीक्षण से प्राप्त परिणामों (तालिका क्रमांक 4.2.3) का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की स्कूलों के शिक्षकों और शहरी क्षेत्र की स्कूलों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। आज के वर्तमान समय के संदर्भ में व्यवासाय की माँग की बढ़ोत्तरी से ग्रामीण या शहरी क्षेत्र का कोई असर कारक प्रभाव दिखाई नहीं देता हैं तथा उनके कार्यो में भी ज्यादा अन्तर नहीं पाया जाता है।

चतुर्थ परिकल्पना के परीक्षण से प्राप्त परिणामों (तालिका क्रमांक 4.2.4) के आधार पर हम कह सकते है कि वर्तमान आधुनिक युग में समाज में अपना सम्मान एवं स्थान को टिकाएँ रखने के लिए ज्यादा योग्यता होने पर भी जो भी नौकरी प्राप्त हुई उसी में ही संतुष्ट रहने के कारण समाज में योग्य स्थान बनाये रखने के कारण प्राथमिक शालाओं में ज्यादा योग्यता वाले और कम योग्यतावाले शिक्षकों की व्यवासायिक संतुष्टि और उनके अध्ययन–अध्यापन पर प्रभाव के बीच अन्तर नहीं दिखाई देता है। आधुनिक समय में नौकरी न मिलने के कारण ज्यादा योग्यता होने

पर भी कम योग्यतावाले स्थान पर नौकरी करने में कोई हीनपण नहीं पाया जाता है।

पांचवीं परिकल्पना न होकर एक उद्देश्य को लिया गया है जिसके परीक्षण से प्राप्त परिणामों (तालिका कमांक 4.2.5) के आधार पर यह कह सकते है कि साबरकांठा जिले के जो तीन तहसीलों के शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया था वह सभी शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट पाये गये है। इससे कहा जाता है कि महिला हो या पुरूष, ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र और कम योग्यता हो या ज्यादा,लेकिन उनको अपेक्षित, उचित माहोल में काम करने का मौका मिलता है तो वे प्रभावी ढंग से कार्य भी करेंगे और अपने कार्य का उन्हें परितोष भी नहीं होगा। उनकों यदि उचित वेतन व उनकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति व्यवसाय से नहीं हो पाती होगी, परंतु आधुनिक समय की माँग से नौकरी की आवश्यकता रहने से सभी अपने कार्य के प्रति ईमानदारी से संतुष्ट होकर कार्यवहन करते पाये गये है।